Dr. DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G.T)

DEPT.OF.PSYCHOLOGY

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI

L.N.M.U DARBHANGA

MOBILE NO:- 6206696451

E-MAIL- dhabeerparasad@gmail.com

PSYCHOLOGY IS THE SCIENCE OF CONSCIOUS EXPERIENCE

इस परिभाषा का विकास उण्ट के द्वारा हुआ है। उण्ट ने चेतन अनुभूति को मनोविज्ञान की विषयवस्तु माना और अन्त:निरीक्षण को विधि माना। उन्होंने बतलाया कि मनोविज्ञान चेतन अनुभूति अथवा तात्कालिक अनुभूति का विज्ञान है। उन्होंने चेतन अनुभूति

की संरचना पर बल दिया और कहा कि मनोविज्ञान चेतन अनुभूति की संरचना का अध्ययन करता है। इसी कारण इस परिभाषा को संरचनावादी परिभाषा भी कहा जाता है। उनके अनुसार चेतन अनुभूति तीन तत्वों से बनी है जिन्हें संवेदन, प्रतिमा तथा भाव कहते हैं। सभी चेतन अनुभूतियां इन्हीं तीन तत्वों से मिलकर बनती है। टीचेनर ने भी अपने गुरु उण्ट के विचार का समर्थन किया। विलियम जेम्स ने भी चेतन अनुभूति को मनोविज्ञान की विषयवस्तु माना। परन्तु, उन्होंने चेतन अनुभूति के बाहरी पक्ष पर अधिक बल दिया। उन्होंने कहा कि चेतन अनुभूति परिवर्तनशील, चयनात्मक तथा लगातार चलने वाली क्रिया है। उन्होंने कहा कि मनोविज्ञान मानसिक जीवन का विज्ञान है जिसमें मानसिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है ।

संरचनावादी परिभाषा के गुण:-

1.इस परिभाषा में कहा गया है कि चेतन अनुभूति के अध्ययन के लिए अन्त:निरीक्षण का उपयोग किया जाता

है। अतः चेतन अनुभूति का सीधा अध्ययन सम्भव होता है। इससे अध्ययन के विश्वसनीय होने की सम्भावना बढ जाती है।

2. चेतन अनुभूति आज भी मनोविज्ञान की बिषय-वस्तु का अंग माना जाता है।

3- आधुनिक मनोविज्ञान के मानवीय दृष्टिकोण के अन्तर्गत आज फिर चेतन अनुभूति के प्रत्यक्ष अध्ययन पर बल दिया जाने लगा है।

दोष:-

इस परिभाषा में कई प्रकार के दोष भी पाए गये हैं, जो निम्न हैं:-

1.इस परिभाषा में एक दोष यह बतलाया गया कि चेतन अनुभूति चंचल होती है। इसका स्वरूप कुछ ऐसा है कि वह हर समय बदलता रहता है। ऐसी हालत में इसका वैज्ञानिक अध्ययन बहुत कठिन है।

2.चेतन अनुभूति को मनोविज्ञान की विषयवस्तु मान लेने पर मनोविज्ञान का क्षेत्र सीमित हो जाता है। लेकिन इस विधि का उपयोग पशु, पागल तथा बच्चों पर संभव नहीं है।

3. चेतन अनुभूति व्यक्तिगत होती है। इसका अनुभव केवल वही व्यक्ति कर सकता है जिसमें अनुभूति हो रही हो।

4. चेतन अनुभूति का अध्ययन करते समय एक ही व्यक्ति प्रयोज्य तथा निरीक्षण का काम करता है। लेकिन ऐसा करना वैज्ञानिक दृष्टिकोण से गलत है।

5. कभी-कभी व्यक्ति अपनी अनुभूति को सही तौर पर व्यक्त करने में असमर्थ होता है।

6. चेतन अनुभूति के अध्ययन को दोहराना संभव नहीं है। विज्ञान का एक लक्षण यह भी है कि उसकी विषय-वस्तु का अध्ययन दोहराया जा सके। यह लक्षण चेतन अनुभूति में नहीं है। जो चेतन अनुभूति एक बार होती है वह फिर उसी रूप में दोबारे नहीं होती है।

इन दोषों के कारण संरचनावादी परिभाषा अधिक दिनों तक टिक नहीं सकी,और व्यवहारवादी परिभाषा इस पर हावी हो गयी।